International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-11, Issue-1 January-February-2024
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारो का योगदान : एक अध्ययन

डॉ0 धनेश कुमार मीना

सहायक आचार्य हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, बिसारु झुझुनूं राजस्थान

सारांश स्त्री का जीवन सदैव अनेक संघर्षो से परिपूर्ण रहा है, उसके सपने, संवेदनाएँ, योग्यताएँ अमानवीय तथा हमेशा जर्जर मान्यताओं की जकड़न से हमैसा दम तोड़ते रहते रहे हैं। इनकी राह आसान कभी नहीं रही। इनकी राह में बहुत सी विचारधाराएं व दुविधा रही है, पुरुषसत्तात्मक भारतीय समाज ने सदियों से इनका शोषण और उत्पीड़न ही किया है। कालांतर में समाज और साहित्य में स्त्री–चिंतन का प्रादुर्भाव आधुनिक शिक्षा तथा विचारों की ही देन है। बीसवीं सदी हिन्दी साहित्य की नजर से स्त्री के लिए वरदान साबित हुई है। मन में जल रही मुक्ति की लौ को आधुनिक साहित्य के विचारों की हवा ने ज्वाला का रूप दिया। इसके फलस्वरूप स्त्री के जीवन तथा स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आये और यह परिवर्तन आज भी हो रहे हैं। जिनका समकालीन भारतीय साहित्य के समकालीन स्त्री उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री के बदलते जीवन संदर्भ, बदलती मानसिकता तथा संघर्ष को विशेष स्थान दिया। यह अस्तित्व, अस्मिता और समता के लिए संघर्षरत स्त्री की कथा है। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्‌गल,शशि प्रभा शास्त्री, चन्द्रकिरण, ममता कालिया जैसी अनेक लेखिकाओं ने स्त्री–चिंतन और स्त्री–लेखन को सार्थकता को प्रमाणिकता दी है । इनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री पूर्वाग्रहों से मुक्त, स्वतंत्र, शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, सबला तथा निर्णय क्षमता से युक्त स्त्री है। वह अपने कार्यों और विचारों से बदलते मूल्यों को अभिव्यक्त करती है। विवाह, मातृत्व जैसे मूल्यों पर सवाल उठा रही है। जिसके लाभ आज दिखने भी प्रारम्भ हो गये है।

मुख्य शब्द भंडारी, चित्रा मुद्‌गल,शशि प्रभा शास्त्री, चन्द्रकिरण, ममता कालिया सुभद्रा कुमारी चौहान ,आदि

प्रस्तावना आजादी की लड़ाई के दौरान ज्यादातर साहित्य में देश प्रेम के भावना दिखती थी। उषा देवी मित्र, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने समकालीन विषयों को अभिव्यक्ति दी, भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का मानना था कि भारतीय नारी कभी भी कृपा की पात्र नहीं थी, वह सदैव समानता की अधिकारी रही है। आधुनिक युग की महिला कवयित्रियों में प्रथम नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का ही आता है। छायावादी युग की प्रमुख कवयित्रियों में महादेवी वर्मा का नाम आता है। कविता के क्षेत्र में श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा रहीं। आजादी के बाद परिस्थितियां बदलने के साथ ही साहित्य और लेखन में महिलाओं के स्वर और विषयों में भी बदलाव दिखने लगा। नारी मुक्ति की भावना और अभिव्यक्ति ज्यादा मुखर रूप से उभर कर सामने आयी। नए परिवेश में पुरुष के साथ बराबरी से कन्धा मिलाकर चलने, वाली पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ साथ वैयक्तिक चेतना ने महिला साहित्य में एक नए स्वर को जन्म दिया।

अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, मेहरुन्निसा परवेज आदि के लेखन ने नारी मूल्यों को नए सिरे से गढ़ा और साहित्य को एक नयी पहचान दी। अमृता प्रीतम ने दशकों पहले ही कह दिया था, 'भारतीय मर्द अब भी औरतों को परंपरागत काम करते देखने के आदी हैं। उन्हें बुद्धिमान औरतों की संगत तो चाहिए होती है पर शादी करने के लिए नहीं। एक सशक्त महिला के साथ की कद्र करना उन्हें अब भी आया नहीं है।' वे अपने वक्त से बहुत आगे की सोच रखती थीं। लेखिकाओं ने बंधनों को तोड़ कर स्त्री पर नैतिकता, सहनशीलता और त्याग जैसे थोपे हुए मूल्यों को नकार दिया और इसकी स्वतंत्र अस्मिता को समाज की एक संपूर्ण ईकाई मान कर स्त्री मुक्ति का मुख्य मुद्दा बनाया। इनके लेखन के केंद्र में स्त्री जीवन की ज्वलंत और भयावह समस्याएं हैं, उन मर्यादाओं की तीक्ष्ण आलोचना है, जिन्होंने हमेशा स्त्री समाज का खुला दमन और शोषण किया। यदि हम एक आदर्श समाज की स्थापना का स्वप्न साकार करना चाहते हैं, तो हमें देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी को सारे हक अधिकार, समानता की कसौटी पर देने होगे, क्योंकि सदियों से तमाम वेदनाओ एवं वर्जनाओं बंधनों से बंधी नारी आज भी पीड़ित है, शोषित है, असुरक्षित है, उपेक्षित है। इसी नारी ने अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षार्थ साहित्य सृजन करके कई मील के पत्थर स्थापित किये है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान अद्वितीय है, प्राचीनतम है प्रभावी है। स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य, दर्शन एवं धर्मशास्त्रों में चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषण के साथ है एवं पुरुष सापेक्ष रूप में चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यही रहा है कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन सभी रचयिता एवं टीकाकार पुरुष थे। दूसरे, मातृसत्तात्मक व्यवस्था के अपदस्थ होने के बाद से समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विधान ही रहा है। फलतः इसके स्वाभाविक ही था कि पुरूष के सन्दर्भ में पुरूष दृष्टि द्वारा स्त्री को देखा जाता है। हिन्दी कथा साहित्य में नारी जागरुकता को स्वर देने वाली लेखिका चित्रा मुद्‌गल ने लक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, जिनावर, भूख, लपटें जैसी कहानियॉ सामाजिक, दार्शनिक एवं आर्थिक स्थिति को निर्भीकता से उजागर किया। मुद्‌गल अपने कलम की धार से समाज के क्रूरतम स्वरूप पर प्रहार करती है। महिला कहानीकारों में नमिता सिंह की कहानी निकम्मा बॉय, जंगल गाथा, खुले आकाश के नीचे, राजा का चौक आदि विशेष है। इसी तरह मणिक मोहनी ने अपना अपना सच, अभी तलाश अभी जारी है महान कहानीकार ममता कालिया की कहानियाँ जैसे "छुटकारा" "उनके यौवन के दावे" हिन्दी लेखों की संख्या बढ़ रही है। इन लेखिकाओं का मानना है कि आज संबंधों के मूल्य और अर्थ बदले नहीं बल्कि नष्ट हो गए हैं। शषि प्रभा शास्त्री की कहानियां उस दिन भी, पतझड़ अनुत्तरित, धुली हुई शाम, एक टुकड़ा शान्तिरथ, साहित्य जगत में अपना स्थान बना लिया है। नारी के जन्म संबंधी दर्द का मार्मिक विवरण जया जादवानी की कहानियों का मिलता है। मन्नू भण्डारी ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए आज के राजनैतिक मुखौटों को प्याज की पत्तों की तरह उधेड़ दिया है। भण्डारी द्वारा रचित कहानी के क्षेत्र में उन्होंने मैं हार गयी, यही सच है। तीन निगाहों की एक तस्वीर, त्रिशंकु रानी मां का चबूतरा, आदि लोकप्रिय कहानियां लिखी। जब कहानियों की बात चल रही है तो उषा प्रियंवदा का नाम सम्मान सहित साहित्य में लिया जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में देशी विदेशी संस्कृति की टकराहट, आदमी का अकेलापन, विघटित परिवार की छटपटाहट जैसी समस्याओं को विशेष स्थान दिया है। रिटायर्ड गजाधर बाबू के जीवन पर आधारित कहानी वापसी पर 1960 में सर्वश्रेष्ठ कहानीकार का

पुरस्कार मिला। इसके अतरिक्त उन्होंने जिन्दगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठा लिखकर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। कहानी के क्षेत्र में शिवानी के महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने लाल हवेली, पुष्पहार, अपराधिनी, रतिविलाप, रथ्या, स्वंयसिद्धा लिखा। शिवानी के सम्बन्ध में **अरुणा कपूर जी** ने लिखा है। कि शिवानी की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है कथा तत्व एवं रस दोनों तत्व पाठक को रचना में बांधे रहते हैं। उनकी हर नायिका अत्यधिक सुन्दर होती है और रचनाओं में वैभव का चित्रण होता है। वस्तुतः उनकी रचनाओं में वैभव के साथ साथ सामान्य जीवन स्थितियों का चित्रण भी हुआ है। नारी का जीवन बहुत ही संघर्ष से विरल हैं। महिला साहित्यकार के लिए सबसे पहले बाहरी संदर्भो में उसका आंतरिक समय होता है जहां वो जीती है। और सांस लेती है, और वही दूसरी ओर होती है समय की चुनौतियां जिससे वो बिलकुल परे होती है उनके जीवन वे सृजन के बीच अनवरत की स्थिति बनी रहती है। उनकी राह आसान नहीं है उनकी राह में बहुत सी विचारधाराएं वे दुविधाएं है। साहित्य जब तक मौखिक परम्परा का हिस्सा था तब तक लेखन में स्त्रियों का योगदान बराबरी के स्तर पर रहा परन्तु इतिहास के पन्नो में उनका जिक्र भी नहीं किया गया क्योंकि उन्हें कोई जगह नहीं मिली अगर नारी का योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो तो वह किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है।आज के दौर में महिलाओं ने पुरुष के मुकाबले साझेदारी निभाई है। महिलाओं के अंदर बढ़ती चेतना और जागरूकता ने पारम्परिक छवि को तोडा है। देखा जाये तो साहित्य में नारी की भागीदारी जिस तेजी से हो रही है उसे देखते हुए नारी की अभिव्यक्ति की सामर्थ्य पर हैरान होने वाली कोई बात नहीं रहेगी।

वर्तमान स्त्री अपने लेखन में स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत और सक्रिय स्त्री रचनाकार स्त्री–हितों की चर्चा स्वयं करने लगी है। अपनी अस्मिता को पहचान रही है। स्त्री रचनाकार एक बड़े बदलाव के साथ आत्मविश्वास से अपने सुख–दुख, आक्रोश और असहमति को व्यक्त कर रही है। वह समान नागरिक के रूप में पुरुष से किसी अतिरिक्त दया या सहानुभूति की अपेक्षा नहीं रखती। मात्र देह मुक्ति को विमर्श न मान कर वह बौद्धिक रूप से अधिक सक्षम, सामाजिक रूप से ज्यादा सचेत और परिपक्व है। इनके लेखन के अनुभवों का दायरा वृहद है और इनकी अभिव्यक्ति में स्त्री मन की व्यथा, आकांक्षा और त्रासदी का जीवंत चित्रण हैं। क्योंकि इनका यथार्थ हमारे समय का भोगा हुआ यथार्थ है। स्त्री साहित्य में आज की स्त्री के जीवन की वास्तविकताएं, संभावनाएं और दासता की दारुण स्थितियों से मुक्ति की दिशाओं का उद्घाटन हुआ है। स्त्री की अपनी पहचान को स्थापित करते हुए इन रचनाकारों ने यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज में हर तरह के शोषण और अत्याचार का उपभोक्ता प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अधिकतर स्त्री ही होती है, चाहे वह धार्मिक कुरीतियां हों, यौन हिंसा या आर्थिक पराधीनता, युद्ध हो या जातिगत दंगे व विवाद। इन सभी का सबसे बुरा प्रभाव स्त्री पर ही पड़ता है। लेखिकाओं ने समाज के इन रूढिवादी बंधनों को तोड़ कर स्त्री पर नैतिकता, सहनशीलता और त्याग जैसे थोपे हुए मूल्यों को नकार दिया और इसकी स्वतंत्र अस्मिता को समाज की एक संपूर्ण ईकाई मान कर स्त्री मुक्ति को मुख्य मुद्दा बनाया। हिन्दी साहित्य का आदिकाल भी महिलाओं की कोमल भावनाओं के अनुकूल नहीं था अतः इस काल में कोई महिला साहित्यकार प्रकाश में नही आई परन्तु उसके पश्चात अन्य सभी कालों में महिलाओं ने साहित्य की वृद्धि में यथा शक्ति योगदान दिया। जो वर्तमान समय तक जारी है। आधुनिक काल में नव जागृति और नव चेतना का उदय हुआ। महिलाओं की

शिक्षा दीक्षा प्रारंभ हुई। उनके हृदय में नवीन भावनाओं ने जन्म लिया। साहित्य की सभी विधाओं पर महिलाओं ने लेखनी चलाई। आधुनिक युग की महिला कवयित्रियों में प्रथम नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का आता है। इन्होंने देश भक्ति पूर्ण रचनायें की। 'झांसी की रानी' तथा वीरों का कैसा हो वसन्त इनकी अत्यन्त प्रसिद्ध रचनायें हैं। इनकी रचना का एक उदाहरण इस प्रकार है।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने प्रकटी तानी थी। बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी।।

गुम हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी। दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी।।

बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इसके अनन्तर छायावादी युग की प्रमुख कवियित्री महादेवी वर्मा का नाम आता है। महादेवी जी के गीत अपनी सहज सहनशीलता, भावविधता के कारण सजीव हैं। विरह की आग में अनजान कविता उनके हृदय से बह निकलती है। कहने का तात्पर्य यही है कि हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहा है, बात चाहे समाज या परिवार को आदर्श स्वरूप में समर्पित करने की हो या नारी वर्ग को पुरूष की दोहरी एवं संकुचित मानस नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय एवं वंदनीय रहा है। आज के दौर में महिलाओं ने पुरुष के मुकाबले साहित्य में साझेदारी निभाई है। महिलाओं के अंदर बढ़ती चेतना और जागरूकता ने पारम्परिक छवि को तोडा है। देखा जाये तो साहित्य में नारी की भागीदारी जिस तेजी से हो रही है उसे देखते हुए नारी की अभिव्यक्ति की सामर्थ पर हैरान होने वाली कोई बात नहीं रहेगी।

निष्कर्ष

कहने का तात्पर्य यही है कि हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहा है। बात चाहे समाज या परिवार को आदर्श स्वरूप में समर्पित करने की हो या नारी वर्ग को पुरूष की दोहरी एवं संकुचित मानसिनारो का योगदान सदैव अविस्मरणीय एवं वंदनीय रहा है। नारी साहित्य लेखन एक ओर स्वातः सुखाय है तो दूसरी ओर जन हिताय है। नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक है। यद्यपि महिला लेखन आज स्पर्धा के युग में चुनौती है। फिर भी उसे हर स्थिति का सामना करने में उसे किसी वैसाखी की जरूरत नहीं। अपितु वह स्वयं मार्ग ढूंढ स्वयं अपने हस्ताक्षर बना रही है। अत्यंत संयम व शालीन बने रहकर सृजन करना भी एक चुनौती है और महिला रचनाकार ऐसा करती आ रही हैं। उसे निर्भयतापूर्वक सोचना और लिखना होगा। आज की यह जरूरत है। कहुगां कि नारी धीरे–धीरे आत्मबोध अनुप्राषित हुई है। फिर भी वह अपने ढंग से प्रतिष्ठित होने के लिए संघर्षशील रही है। इसलिए विरोध–अवरोध तिरस्कार–बहिष्कार को नकारते हुए उसे आगे आना होगा। तब ही वह समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह और अपनी सार्थकता को सिद्ध कर पाएगी। आशा है कि निकट भविष्य में हिन्दी साहित्य को इनकी नवीन साहित्य कृतियाँ और भी अधिक सक्तशाली बनाएंगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 आलोक श्रीवास्तव स्त्री मन की चितेरी महादेवी (आलेख), नवम्बर 1918

2 सुभाश वर्मा नारी विमर्श की गहरी जडे (आलेख), आजकल मासिक पत्रिका नई दिल्ली

3 महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली

4 महिला समाज वीकली पत्रिका 24 अप्रैल 2023